Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की आलोचनात्मक द्रष्टि

Dr. Ramesh Dahiya*

M. A., M.Phil. (Hindi), M.Ed, Lectruer Hindi at GSSS Karola, Gurugram

शोध-आलेख सार: *हिंदी साहित्य के आधार स्तम्भ चिंतक आलोचक उत्कृष्ट निबंधकार दार्षनिक सिद्वहस्त कवि और नीर-क्षीर विवेक से संपन्न संपादक तथा सफल अध्यापक आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म 1884 ई. में पूर्वी उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। 1908 ई. से लेकर 1919 ई. तक का समय शुक्ल जी के मानसिक बौद्विक विकास के निखार ओर उत्कर्ष का है। इस दौरान उन्होंने इतिहास दर्शन मनोविज्ञान और विज्ञान का उत्साह से अध्ययन किया और लेखन के नाम पर कोश के लिए संगृहीत शब्दों पर प्रामाणिक टिप्पणियों के साथ नागरी प्रचारिणी पत्रिका को नया रूप देने और समृद्व करने के लिए विभिन्न विषयों पर निबंध लिखा शुक्ल जी एक सुविख्यात निबंधकार एव समालोचक के रूप में प्रसिद्व हैं, किंतु उनके साहित्य के जीवन का आरंभ कविता कहानी और नाटक रचना से होता है। उनकी प्रथम रचना एक कविता थी जो 1896 ई. में आनंद कादंबिनी में भारत और बसंत नाम से छपी थी। इसी तरह उनके द्वारा-लिखित कहानी ग्यारह वर्ष का समय सरस्वती में प्रकाशित हुई थी जो हिंदी की प्रारंभिक चार सर्वक्षेष्ठ कहानियों में से है। शुक्ल जी का साहित्यिक जीवन विविध पक्षो वाला है। उन्होंने ब्रजभाषा और खड़ी बोली में फुटकर कविताएँ लिखी तथा एडविन आर्नलड के लाइट ऑफ़ एशिया का ब्रजभाषा में बुद्वचरित के नाम से पद्य भी किया 1919 ई. में मालवीय जी के आग्रह पर जब शुक्ल जी ने अध्यापन आरंभ किया तब उन्होंने विश्वविद्यालय में हिंदी विषय के स्वीकृत होने के बाद पाठयक्रम के अनुरूप पुस्तकें उपलब्ध न होने की समस्या को चुनौती के रूप में स्वीकार किया। स्वयं स्तरीय ग्रंथों की रचना की और संपादन कार्य भी किया। रस मीमांसा तथा चिंतामणि में संग्रहित लेख जायसी तुलसी और सूर पर लिखी उनकी महत्त्वपूर्ण आलोचनाएँ हिंदी साहित्य में मील का पत्थर मानी जाने वाली कृति हिंदी साहित्य का इतिहास एवं अनेक ग्रंथ इसी अकादमिक चुनौती को स्वीकार करके रचे गए।*

मुख्य-शब्द: *नीर-क्षीर, विवक, इतिहास दर्षन, मनोविज्ञान, पत्रिका, सरस्वती, ब्रजभाशा, खड़ी बोली, हिंदी साहित्य।*

----------X----------

भूमिका:

शुक्ल जी द्वारा विरचित प्रमुख मौलिक और अनूदित रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

रामचंद्र शुक्ल की आलोचना-द्रष्टि

आलोचना उन विधाओं में से है जो पश्चिमी साहित्य की नकल पर नहीं बल्कि अपने साहित्य को समझने-बूझने और उसकी उपादेयता पर विचार करने की आवश्यकता के कारण जन्मी और विकसित हुई और इस आलोचना को परिपक्वता शुक्ल युग में आकर मिली। इस युग के केन्द्रीय समीक्षक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी रहे यद्यपि उनके समकालीन बाबू गुलाबराय बाबू श्याम-सुंदर दास आदि समीक्षक भी आलोचना क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। शुक्ल जी ने आलोचना के तेवर व कलेवर में अभूतपूर्व परिवर्तन कर दिया। निश्चित मानदंड व अदभुत सहृदयता के साथ शुक्ल जी ने आलोचना अधिकतर बहिरंग बातों तक ही रही। भाषा के गुण-दोष रस अलंकार आदि की समीचीनता इन्हीं सब परंपरागत विषयों तक पहुँचीं। स्थायी साहित्य में परिगणित होने वाली समालोचना जिसमें किसी कवि की भावना का सूक्ष्म व्यवच्छेदन होता है उसकी मानसिक प्रवृत्ति की विषेशताएँ दिखाई जाती है बहुत कम दिखाई पड़ी। शुक्ल जी आधुनिक आलोचना के अधिकृत आचार्य है। उन्होंने पारंपरिक काव्य चिंतन को आधुनिक वैज्ञानिक द्रष्टि तथा पाश्चात्य काव्य चिंतन के आलोक में पुर्नव्याख्यायित करके समृद्ध और प्रासंगिक बनाया। जहाँ वे भरत अभिनव और मम्मट की परंपरा से जुड़े दिखाई देते हैं वही दूसरी ओर अरस्तू आर्नल्ड रिचर्डस और इलियट से संवाद स्थापित करते भी नजर आते है। शुक्ल जी की द्रष्टि वैज्ञानिक प्रगतिशील एवं इहलौकिक थी। शुक्ल जी एक युग विधेयक और आलोचनात्मक मानदंड के निर्माता हैं। उन्होंने हिन्दी आलोचना को नई दिशा एवं नई जमीन दी है। हिंदी साहित्य में कविता के क्षेत्र में जो स्थान

www.ignited.in

निराला का रहा और उपन्यास के क्षेत्र में जो स्थान प्रेमचद का रहा आलोचना के क्षेत्र में वही स्थान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। इनके द्वारा तैयार किए गए प्रतिमान मौलिक और प्रौढ़ थे। अपने अतीत व समकालीनता से जुड कर उन्होंने आलोचना की दशा व दिशा बदल दी। इनकी सूक्ष्म द्रष्टि ने अब तक हुई आलोचनाओं की कमजोरियों की परख लिया था। अतः वे साहित्य की बहिरंग सजावट के बजाय काव्य की आत्मा, रचनाकार की द्रष्टि तथा उनके उद्देष्य को समझ सके और यही समझ उन्हें अन्य आलोचकों से अलग ख़डा करती है।

शोध-प्रविधिः

इस शोध-पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ-साथ शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

आचार्य शुक्ल की द्रष्टि आलोचना पद्धति के लिए काफी संश्लिष्ट थी परन्तु वह स्पष्टता लिए हुए भी थी। उन्होंने सैद्धान्तिक तथा व्यावाहारिक दानों प्रकार की आलोचनाओं में बखूबी हस्तक्षेप किया। शुक्ल जी की आलोचना द्रष्टि के महत्तव को इस तथ्य से जाना जा सकता है कि उनके समकालीन आलोचक उनकी धरा में तो बहे ही तथा उनके बाद के आलोचकों ने भी या तो उनकी परंपरा का निर्वाह किया या उनकी परंपरा से जुड़कर ही नई धारा संज्ञान करवाया। इस प्रकार शुक्ल जी के बाद की आलोचना उनकी द्रष्टियों के समर्थन या विरोध में खड़ी इमारत सी लगती है। आज भी वे उतना ही महत्त्व रखते है। जितना उस समय में। उनके तर्क आज भी अकाटय है। और उनकी पैनी-पारखी नजर आज भी काबिले-तारीफ है। हिंदी की लगभग 150 वर्शों की आलोचना के इतिहास में शुक्ल जी केंद्रीय पुरूष आज भी बने हुए हैं उनको छोड़ कर किसी साहित्यिक विशय पर कोई चर्चा न शुरू की जा सकती है और न ही समाप्त। इसी से उनकी आलोचना द्रष्टि की उपादेयता समझी जा सकती है। शुक्ल जी की आलोचना द्रष्टि पूर्णतः स्पष्ट परिपक्व एवं विकसित है। उनकी सैद्धान्तिक व व्यवहारिक आलोचना द्रष्टि को निम्न रूप से समझा जा सकता है।

सैद्धान्तिक द्रष्टि:-

सैद्धान्तिक द्रष्टि से वे रससिदान्त के समर्थक और पोषक हैं परन्तु उन्होंने शब्दशक्ति रीति और अलंकार को कमतर महत्त्व नहीं दिया है। उन्हीं के शब्दों में शब्द-शक्ति रस रीति और अलंकार-अपने यहां की ये बातें काव्य की स्पष्ट और स्वच्छ मीमांस में कितने काम की हैं मैं समझता हूँ इनके संबंध में अब और अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। देशी-विदेशी नई-पुरानी सब प्रकार की कविताओं की समीक्षा का मार्ग इनका सहारा लेने से सुगम होगा|

उनकी आलोचना द्रष्टि सूक्ष्म तार्किक विश्लेष्णात्मक व निगमनात्मक विधि पर आधारित थी। वे रसवादी लोकमंगलवादी जैसे उच्च आदर्शो को लेकर साहित्य में चलते हैं। वे हमेशा कबीर की तरह प्रत्यक्षवादी बने रहे। जाति वातावरण तथा क्षण इन तीनों तत्वों को उन्होंने काव्य की आत्मा में झांक कर देखा। उनकी स्थिति जाति समाज से जुड़ी थी वातावरण चित्तवृत्ति को बनाने वाली स्थिति तथा क्षण वह काल था जिसमें रह कर रचनाकार ने उप साहित्य का सृजन किया था। इन तीनों तत्वों को लेकर वे उस छत पर जा पहुँचते है जहां से खड़े होकर साहित्यकार ने अपने युग को अपनी कविता को उन कवियों में व्याप्त दर्द को लिखा और महसूस किया था। उनकी प्रत्यशवादी द्रष्टि उनकी आलोचना को वैज्ञानिक चिंतन देती है जिसके द्वारा वे साहित्य की आलोचना करते है। उनकी सैद्धान्तिक मान्यताएँ चिंतामणि के निबंधों में समाई हुई है। उनके ही उन्होंने सैद्धान्तिक समीक्षा के प्रतिमान निश्चित किए हैं। इसे कविता क्या है काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था साधारणीकरण और व्यक्ति-वैचित्रयवाद रसात्मक बोध् के विविध रूप काव्य और प्रकृति काव्य में अर्थ की योग्यता प्रत्यक्षानुभूति एवं रसानुभूति निबंध् क्या है आदि निबंधों द्वारा समझी जा सकती है। उन्होंने पारंपारिक रसवादी विवेचन जो अपने आरंभिक दिनों के व्यापकता के बावजूद पंडित जगन्नाथ तक आते-आते संकीर्ण हो गया था उसे लोकमंगल के आदर्शवादी उच्च भावभूमि से अनुवाद कराकर पुनः उसमें विस्फोट सा कर दिया। साहित्य में सरसता महसूस की जाने लगी। हर साहित्य को लोकमंगलवाद की कसौटी पर कसा जाने लगा। रहस्यवाद (काव्य में रहस्यवाद) की जटिलताओं से दूर जाकर इन्होंने स्पष्टता को महत्व दिया। साधारणीकरण की व्याख्या में उन्होंने एक नई अवधारणा का भी सूत्रपात किया। शुक्ल जी की आलोचना द्रष्टि वृहद जनवादी थी। हिंदी शब्दसागर भूमिका जो बाद में हिंदी साहित्य का इतिहास के रूप में आई में उन्होंने अपनी आलोचनात्मक धारणा को स्पष्ट रूप से व्याख्यायित किया है। जिसमें जनता और साहित्य की पारस्परिक रिश्तों को स्वीकार किया गया है। उनकी आलोचना द्रष्टि की सबसे बड़ी उपलब्धि लोकमंगलवाद का मान है जिसके लट्ठे से किसी भी साहित्य की सुंदरता आदर्शपूर्ण-सामाजिक-कल्याणपरक रीति की उत्पत्ति की जा

www.ignited.in

सकती है। यह कसौटी उनकी हिन्दी आलोचना को दी गई सबसे बड़ी उपलब्धि है। कविता का उद्देश्य सहृदय को लोकमानस की भावभूमि पर पहुँचा देना है। यह कहना निश्चित ही जनतांत्रिक परंपरा को सुदृढ़ करना है। वे लोक की भूमि पर अपने कदम मजबूती से जमाकर जीवन एवं साहित्य पर द्रष्टि डालते है और उसकी व्याख्या करते है। काव्यषास्त्र संबंधी विवेचन में भी उन्होंने अपने द्रष्टिकोण से भाव विभाग एवं रस की पुनः व्याख्या की है। भाव उनके लिए मन की वेगयुक्त अवस्था विशेष है प्रत्यक्ष बोध् अनुभूति और वेगयुक्त प्रवृत्ति इन तीनों के गुण संश्लेषण का नाम भाव है। मुक्त सहृदय मनुष्य अपनी सत्ता को लोक सत्ता में लीन किए रहता है। लोक सहृदय के लीन होने की दशा का नाम रस दश है। उनकी प्रत्येक द्रष्टि तार्किक व मनोवैज्ञानिक आधार लिए हुए थी रस की व्याख्या भी इससे अछूती नहीं रही।

व्यवहारिक द्रष्टि

शुक्ल जी की सैद्धान्ति समीक्षा साहित्यिक रचनाओं के आधार पर स्थापित है अतः उनकी सैद्धान्तिक और व्यावहारिक समीक्ष में संगति है। वे जहाँ सैद्धान्तिक प्रतिपादन में प्रवृत्त होते हैं वहाँ प्रचुर उदाहरण और उदाहरण देकर अपने कथन को प्रमाणित कर देते हैं। उनके सिद्धांत उस पर से थोपे हुए नहीं बल्कि साहित्य के रसास्वादन के माध्यम से प्राप्त हुए निष्कर्ष है वे ही उनके समीक्षा सिद्धान्त है।

आलोचना के लिए सहृदयता आवश्यक होती है। शुक्ल जी ने प्राचीन साहित्य की युगानुकूल व्याख्या करते हुए उसे अपने युग की सौन्दर्य द्रष्टि से व्याख्या कर प्रासंगिक व सौन्दर्यवान बना दिया। तुलसीदास, सूरदास, जायसी, वाल्मीकि, कालिदास को प्रासंगिक व पुनः प्रतिष्ठित करने का श्रेय शुक्ल जी को है वे शील, शक्ति सौंदर्य को किसी भी नायक का उत्कर्षतम गुण मानते थे। शुक्ल जी का अधिकांश महत्त्वपूर्ण लेखन भूमिका के रूप में हुआ। उनके काव्यचिंतन का विकास उनके प्रिय कवियों की व्याख्या के दौरान हुआ। इससे उन्हें हर भाव के प्रति गहरी व गूढ़ जानकारी मिल गई और उनमें अंतर करने योग्य सामर्थय भी। भाव या मनोविकार का विशद विवेचन चिंतामणि में मिलता है। भाव या मनोविकार, ईष्या, घृणा, क्रोध, लोभ और प्रीति, श्रद्धभक्ति, करूणा, भय अदि का उन्होंने विशद धर्म विश्लेषण व व्याख्या की तुलसी का भक्ति मानस की धर्मभूमि आनन्द की सिद्धावस्था मलिक मुहम्मद जायसी, सूरदास, तुलसी की भावुकता, बिहारी लाल, घनानन्द, भारतेन्दु और उनका मंडल, श्रीधर पाठक और स्वच्छंदतावाद छायावाद आदि निबंधों में उनकी व्यवहारिक आलोचना द्रष्टि मिलती है। जिसमें उन्होंने करूणा, प्रेम, शील व आनंद दशा की साधनावस्था तथा सिद्धावस्था को अनुभव किया और उन सबकी लोकमंगलवादी द्रष्टि से व्याख्या भी की है। आचार्य शुक्ल ने अपने सुचिंतित काव्य-प्रतिमानों का अपनी व्यावहारिक समीक्षाओं में बड़ी कुशलता से विनियोग किया। उनकी द्रष्टि व्यावहारिक होते हुए भी सूक्ष्म विश्लेषण युक्त व मर्मग्रहिणी थी तथा वे आलोचना करते समय दूसरे आलोचकों से भी यही आशा करते थे उनका कथन था कि इसके लिए सूक्षम विष्लेशण बुद्धि और मर्म-ग्रहिणी प्रज्ञा अपेक्षित है। शुक्ल जी ने स्थायी साहित्य में स्थान पानेवाले-तुलसी, जायसी, तथा सूर पर स्वतंत्र रूप में लिखी गई अपनी समीक्षाओं में इन कवियों की विचारधारा में डूबकर उनकी अंतर्वृत्तियों का विष्लेशण करने में अपनी सूक्ष्म बुद्धि और मर्म ग्राहिणी प्रज्ञा का परिचय दिया है।

तुलसीदास काल क्रमानुसार उनकी पहली समीक्षा कृति है। शुक्ल जी ने इसे गोस्वामी तुलसीदास के महत्व के साक्षात्कार और उनकी विषेशताओं तथा उनके साहित्य में छिपी द्रष्टियों के लघुप्रयत्न के रूप में लिखा। इसमें उन्होंने तुलसीदास की भक्ति उनके आदर्श उनकी लोकमंगलवादी द्रष्टि तथा लोकादर्श का नितांत मौलिक व उत्कृष्टतम् स्वरूप से विवेचन किया है। तुलसीदास चूंकि उनके प्रतिमान है, आर्दष है, समन्वय संस्थापक हैं अतः शुक्ल जी ने उनके व्यकित्व व उनके काव्य की गहरी छानबीन की। किसी को महान बनाने के लिए एक बड़े आलोचक की भी आवश्यकता होती है। इस अर्थ में तुलसी का काव्य शुक्ल जी का ऋणी है। शुक्ल जी के अनुसार तुलसीदास भारतीय परम्परा समाज व संस्कृति के जीते जागते प्रतीक थे तथा उनका काव्य इसका प्रमाण बना। उनके राम शील,, शक्ति व सौन्दर्य से युक्त लोकोत्तर चरित्र हैं। और उनके उपास्य भी। गोस्वामी तुलसीदास के राम में भक्तों के सहृदय को अपनी ओर आकृष्ट करके उसी अपनी वृत्तियों की ओर ढालने की अदभुत क्षमता है और यही शील उनके भक्तों के भक्ति का मूल है। शुक्ल जी का इस सन्दर्भ में कथन है कि भक्ति और शील की परस्पर स्थिति भी ठीक उसी प्रकार बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव से है जिस प्रकार आश्रय व आलम्बन की। और आगे चलिए तो आश्रय और आलम्बन की परस्पर स्थिति भी ठीक उसी प्रकार है जैसे ज्ञाता और ज्ञेय की।

शुक्ल जी वस्तु परिगणन शैली को हेय मानते थे और इसीलिए वे तुलसीदास के वस्तु परिगणन शैली की उपेक्षा की प्रशंशा करते है। भावों के उत्कर्षक के रूप में जब गोस्वामी जी अलंकारों का प्रयोग करते है। तो शुक्ल जी भी इस प्रयोग का समर्थन करते हैं। शुक्ल जी मर्यादावादी थे जिनके सामाजिक आदर्ष भी उच्च भावभूमि पर स्थित थे। अतः वे तुलसीदास के

काव्य में भी आदर्शो व लोक मर्यादाओं को देखते है। उनके रामराज्य की स्थापना की लोकमंगलवादी द्रष्टि से वे अभिभूत हो जाते है। वे तुलसी की सहृदयता, प्रबन्धात्मक शक्ति, मेघ, भावुकता, अनुभूति, प्रभाव-सभ्यता, रसवादिता आदि की प्रशंशा करते है। तुलसी के काव्य की विशेषताएँ शुक्ल जी की व्यावहारिक आलोचना को द्रष्टि प्रदान करते हैं तथा आलोचना का निर्माण करते हैं। शुक्ल जी जैसा महान आलोचक पाकर अमर हो गया।

जायसी को शुक्ल जी ने श्रेष्ठता के दूसरे पायदान पर स्थान दिया है इसका कारण पदमावत में व्याप्त प्रबंधनियोजन लोकधर्मिता तथा मानवीयता ही है। जायसी का उदात्त सहृदय एकता में विश्वास रखता है। जायसी के अनुसार हिंदू मुस्लिम सभी का सुख-दुख व विरह एक है। शुक्ल जी ने जायसी की अपनी दो सौ प्रष्ठो की विस्तृत समीक्षा में प्रेम गाथा परंपरा जायसी का जीवन वृत्त पदमावत की कथा और उसका ऐतिहासिक आधार पदमावत की प्रेमपद्धति ईश्वर-मुख-प्रेम मत और सिद्धांत जायसी का रहस्यवाद जायसी की जानकारी आदि अनेक विषयों पर गंभीरतापूर्वक विचार किया है किंतु उनकी प्रवृत्ति मुख्यतः जायसी की प्रबन्ध कल्पना, रस-निरूपण, भाव व्यंजना, अलंकार विधान और काव्यभाषा जैसे विषयों के विवेचन में ही रमी है। शुक्ल जी ने तुलसी और जायसी के समकक्ष ही सूरदास को माना है। इस संदर्भ में वे सूरदास की विवेचना करते हुए लिखते है कि यदि हम मनुश्य जीवन के संपूर्ण क्षेत्रों को लेते है तो सूरदास की द्रष्टि परिमित दिखाई पडती है पर यदि उनके चुने हुए श्रंगार तथा वात्सल्य को लेते हैं तो उनके भीतर उनकी पहुँच का विस्तार बहुत अधिक पाते हैं। सूर के सहृदय से निकली प्रेम की तीन प्रबल धाराओं विनय के पद बाल लीला के पद और प्रेम संबंधी पद से सूर ने बड़ा भारी सागर तैयार कर दिया। इस सागर में शुक्ल जी का मन रमता है।

शुक्ल जी ने छायावाद में उपस्थित रहस्यवादिता का विरोध किया। इसी आधार पर उन्होंने कबीर के काव्य का भी विरोध किया था। परन्तु उन्होंने अभ्यान्तर प्रभाव-साम्य के अनुसार अप्रस्तुत की योजना को छायावाद की बहुत बड़ी विशेषता माना है। शुक्ल जी ने छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद को रहस्यवाद के करीब खड़ा करके उनके समस्त काव्य (खासकर कामायनी) को उस आनंदवाद का प्रवर्तक बना दिया जो एकांतिक प्रेम की वकालत करता है।

निष्कर्ष:-

इस प्रकार शुक्ल जी की आलोचना पांडित्यपूर्ण चिंतन मौलिक विवेचन और गहन अनुशीलन का ऐतिहासिक मानदंड है। महाकवि तुलसीदास, सूरदास, जायसी, पर लिखी गयी विस्तृत समालोचनाओं तथा ग्रन्थ भूमिकाओं द्वारा जहाँ उनकी मौलिक तर्क पूर्ण और अकाटय स्थापनाएँ प्रकाश में आई वहीं हिंदी समालोचना की द्रष्टि व्यवस्थित और विकसित हो पाई है। जीवन की समग्रता के कारण ही आचार्य शुक्ल विरोध का सामंजस्य देखने के आग्रीही थे। उन्होंने हिंदी की सैवान्तिक समीक्षा को नया तथा मौलिक रूप प्रदान किया। पाश्चात्यवादी प्रवृत्तियों एवं विचारधाराओं का गहरा ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद उसे नवीन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का श्रेय शुक्ल जी को जाता है। उनके अनुसार किसी साहित्य में उन्नति केवल शहर की भददी नकल से नहीं की जा सकती। बाहर से सामग्री आए खूब आए परन्तु वह कूड़ा-करकट के रूप में न इकटठी हो जाए उसकी कड़ी परीक्षा हो उस पर व्यापक द्रष्टि से विवेचन किया जाए जिससे हमारे साहित्य के स्वतंत्र और व्यापक विकास में सहायता पहुँचायें शुक्ल जी प्रथम ऐसे आचार्य है जिन्होंने हिंदी में सैद्धान्तिक समीक्षा के स्वंतत्रा प्रतिमान को विकसित किया है तथा उनकी प्रासंगिकता को व्यावहारिक साहित्य पर करते हुए आगे बढ़ाया है। हिंदी के मौलिक समीक्षा शास्त्र की नींव भी उन्होंने रखी तथा उसे दृढ़ आधार भी प्रदान किया। वे क्रांतिकारी युग प्रवर्तक आलोचक थे। उन्होंने साहित्य को रीतिवादी मानसिकता से पूर्णतः मुक्त कराते हुए रस जैसे वैयक्तिक तत्व को लोकमंगल में जोड़कर उसके भीतर निहित सामाजिक पक्ष को उभारा। उन्होंने संस्कृत के मानदंड व अंग्रेजी समीक्षा के प्रतिमानों से भी हिंदी आलोचना को सुसर्जित करते हुए साहित्य के संबंध में संगत द्रष्टिकोण का निर्माण किया है। उनके इस द्रष्टिकोण का आधार ज्ञान का भौतिकवादी सिद्धान्त है, जिसके अनुसार ज्ञान और भाव का आधार यह भौतिक जगत ही है। नलिन विलोचन शर्मा ने अपनी पुस्तक साहित्य का इतिहास दर्शन में कहा है कि शुक्ल जी से बड़ा समीक्षक संभवतः उस युग में किसी भी भारतीय भाषा में नहीं था। यह बात देखने पर उचित ठहरती है। बल्कि ऐसा लगता है कि समीक्षक के रूप में शुक्ल जी अब भी अपराजेय है। निष्चितरूपेण शुक्ल जी की आलोचना द्रष्टि अत्यन्त उदात्त व्यापक जीवन-द्रष्टि लिए हुए लोकमंगलवादी धरातल तक फैली हुई है। निष्चित रूपेण शुक्ल जी हिंदी आलोचना के शिखर पुरूष व अधिकृत आचार्य हैं।

www.ignited.in

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ - 550
2. रचना और समालोचना - डॉ. हरदयाल
3. हिंदी आलोचना प्रवृतियाँ और आधारभूमि - डॉ. रामदरष मिश्र
4. आधुनिक हिंदी आलोचना एक पुनर्विचार - डॉ. सुंदरलाल कथूरिया
5. हिंदी आलोचना की बीसवीं सदी - डॉ. निर्मला जैन
6. हिंदी आलोचना- विष्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ - 67
7. हिंदी आलोचना - विष्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ - 67
8. डॉ. नगेन्द्र विष्लेशण और मूल्यांकन - डॉ. एस. लक्ष्मी
9. हिंदी साहित्य कोष (भाग-2 - ज्ञानमंडल लिमिटेड
10. रामचन्द्र शुक्ल - डॉ. सत्यदेव मिश्र
11. आजकल (पत्रिका) - अक्टूबर 2009
12. आचार्य रामचंद्र शुक्ल - रामचंद्र तिवारी
13. रस मीमांसा, पृष्ठ - 217
14. विष्वनाथ त्रिपाठी हिंदी आलोचना पृष्ठ - 55
15. चिंतामणि भाग - 2 पृष्ठ 103
16. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृश्ठ 249

Corresponding Author

Dr. Ramesh Dahiya*

M. A., M.Phil. (Hindi), M.Ed, Lectruer Hindi at GSSS Karola, Gurugram

rameshdahiya887@gmail.com